यह तय करने के लिए कि पुनर्जन्म मौजूद है या नहीं, हमें दो पहलुओं पर विचार करने की आवश्यकता है। एक ईश्वर से संबंधित है और दूसरा आधुनिक विज्ञान से संबंधित है जो कहता है कि ऐसे व्यक्तित्व की कोई आवश्यकता नहीं है.

आइए पहले ईश्वर से संबंधित पहलुओं पर विचार करें।

ईश्वर के पास असंख्य शक्तियाँ और विशेषताएँ हैं। यह उसे अद्वितीय चरित्र प्रदान करता है। उसके बराबर या उससे श्रेष्ठ कोई नहीं है। इसलिए वह अपनी तरह का अकेला है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp +91 9423209132

ईश्वर के कुछ महत्वपूर्ण गुण हैं
1. सर्वव्यापी - हर जगह मौजूद
2. सर्वज्ञ - सब कुछ जानता है
3. सर्वव्यापी - सभी शक्तिशाली
4. अनंत सुख, अनंत जीवन, अनंत ज्ञान से परिपूर्ण।

इस प्रकार होने के कारण वह कोई अन्याय नहीं कर सकता क्योंकि कोई भी उसे धोखा नहीं दे सकता है और क्योंकि उसे किसी से किसी चीज की आवश्यकता नहीं है या कोई भी उसे किसी भी तरह से नुकसान नहीं पहुंचा सकता है; वह सबके साथ बराबर व्यवहार करता है।

अब, कुछ सवाल हैं।
1. कुछ अमीर दूसरे गरीब क्यों हैं?
2. कुछ अधिक सक्षम और अन्य कम सक्षम क्यों हैं?
3. कुछ को अच्छे अवसर क्यों मिलते हैं और दूसरों को नहीं?
4. कुछ मुसलमान, कुछ हिंदू क्यों हैं?

5. क्यों, क्यों, क्यों ..... कई क्षेत्रों में ......
यदि आप पुन: जन्म पर विचार नहीं करते हैं, तो सारा दोष ईश्वर पर होगा और वह
नीचे के रूप में दिखाई देगा ।
1. पक्षपाती
2. निर्दयी
3. अन्यायी
जो सत्य नहीं है।

µµµK±¦°££°~¢¦~K¡-«
±¦°££°~¢¦~K£±¡¦--ª]¥«~§ªK¡-«
t ¦~²±^®®=HVN=VQOPOMVNPO

और यदि आप पुनर्जन्म पर विचार करते हैं, तो सारा दोष आत्मा पर होगा।

आपको जो मिलता है वह पहले के जीवन में आपके स्वयं के कार्यों का परिणाम है। आपकी बुरी स्थिति का तात्पर्य है कि आपने पहले के जीवन में दूसरों के साथ अन्याय किया है। पुनर्जन्म एक सरल कहावत के साथ सब कुछ समझाता है 'जैसी करनी वैसी भरनी।'

इस प्रकार भगवान के सभी गुण बरकरार हैं।

अब इस्लाम को सवाल है -
'भगवान या खुदा के सभी गुणों को कैसे उचित ठहराया जा सकता है जबकी इस दुनिया में मौजूद अन्याय, अत्याचार, असमानता, पीड़ाओं को हम देखते हैं?'

इस्लाम के पास कोई जवाब नहीं है। हिंदू जबाब देताहै।
क्या पुनर्जन्म सिर्फ जीवन की विविधता की व्याख्या करता है या इसके समर्थन करने के लिए कोई अंतर्निहित सिद्धांत है?

कृष्ण कहते हैं, 'कोई भी मौजूदा तत्व कभी भी अस्तित्वहीन नही हो सकता और कोई भी गैर-मौजूदा तत्व कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकता।'

ये सिद्धांत अधुनिक ऊर्जा तथा द्रव्य संरक्षण के सिद्धांत से मिलता जुलता है। अंतर इतना है कि हिंदु सिद्धांत ऊर्जा तथा द्रव्य इन जड पदार्थों के साथ चैतन्य तत्व का भी समावेश करता है। माया (प्रकृति)ऊर्जा तथा द्रव्य का संग्रह है अतएव जड है। भगवान और जीव चैतन्य तत्व है। जड़ पदार्थ तो हम जानते है - जैसे पत्थर आदि। चैतन्य तत्व वे होते है जो खुद जीवित रहते तथा जब तक रहते है तब तक जड़ शरीर को भी चैतन्य प्रदान करते है। जब जीव शरीर से निकल जाता है तो हिलने डुलने वाला शरीर अपनी मूल जड़ अवस्था को प्राप्त हो जाता है जिसे हम शव कहते है।

ईसी प्रकार ईश्वर, जीव और प्रकृति (माया, निसर्ग) ये जो तीन मौजूदा तत्व हैं, कभी भी अस्तित्वहीन नहीं हो सकते। इसलिए भी जीव का पुनर्जन्म उचित है। इसमें ईश्वर एक तथा माया एक और जीव अनंत संख्या में है।

जैसा कि हम सभी जानते हैं कि ईश्वर सभी शक्तियों का घर है। ईश्वर इस जटिल ब्रह्मांड को बनाने के लिए प्रकृति या माया (निसर्ग) को शक्ति प्रदान करता है। संक्षेप में दुनिया का निर्माण माया द्वारा होता है। माया जो ईश्वर द्वारा सशक्त होती है वह निम्नलिखित क्रम से दुनिया का निर्माण करती है ।

1.->अहंकार -> २.पंच तन्मात्रा (आकाश, वायु, अग्नि, जल, भूमि के बीज) ->३. आकाश ->४. वायु-> ५.अग्नि

-> ६. जल -> ७. भूमि

इस्लाम विश्वके निर्माण के लिये कोइ भी सिद्धांत प्रदान नहीं करता है जबकि हिंदू करता है।

डिक टेरी एक जानेमाने लेखक है। वे द गॉड पार्टिकल सहित विज्ञान और प्रौद्योगिकी के बारे में लिखे गये कई पुस्तकों के लेखक तथा सह-लेखक हैं। वह ओमनी पत्रिका के कोफ़ाउंडर हैं और उन्होंने डिस्कवर, द न्यूयॉर्क टाइम्स पत्रिका और द अटलांटिक मंथली के लिए लिखा है। कहते हैं -

"भारतीय (हिंदू) कॉस्मोलॉजिस्ट (शास्त्रों में), पृथ्वी की आयु का अनुमान बतानेमें सबसे पहले कामयाब रहे है। हिंदू शास्त्र पृथ्वी की आयु 4 अरब से अधिक वर्षोंकी बताते है जोकि अधुनिक अनुमान से मिलती है। वे परमाणुवाद, क्वांटम भौतिकी और अन्य वर्तमान सिद्धांतों के आधुनिक विचारों के सबसे करीब आए। भारत ने बहुत जल्दी, स्थायी रूप से द्रव्य के परमाणु सिद्धांत का विकास किया था। संभवतः ग्रीक परमाणुवादी विचार भारत द्वारा प्रभावित था। फारसी सभ्यता द्वारा भारतीय सिद्धांत ग्रीसतक पहुँचा था। "

इस्लाम का कोई वैज्ञानिक आधार नहीं है, हिंदू विज्ञानयुक्त है ।